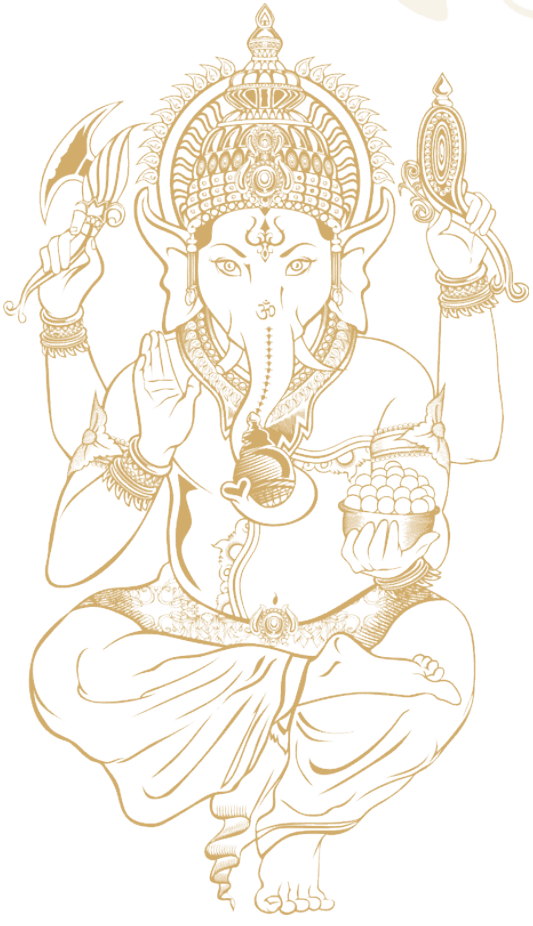

Urvashi

20 Sep 1989

04:17 AM

Basingstoke

Model: Web-MyKundli

Order No: 120672601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**19-20/09/1989**
दिन	मंगल-बुधवार
जन्म समय	**04:17:00 घंटे**
इष्ट	53:48:44 घटी
स्थान	**Basingstoke**
राज्य	Hampshire
देश	United Kingdom

अक्षांश	51:16:00 उत्तर
रेखांश	01:05:00 पश्चिम
मध्य रेखांश	00:00:00 पश्चिम
स्थानिक संस्कार	-00:04:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	-01:00:00 घंटे
स्थानिक समय	03:12:40 घंटे
वेलान्तर	00:06:13 घंटे
साम्पातिक काल	03:08:39 घंटे
सूर्योदय	06:45:30 घंटे
सूर्यास्त	19:09:40 घंटे
दिनमान	12:24:10 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	03:25:47 कन्या
लग्न के अंश	06:05:51 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**वृष - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**कृतिका - 4**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	वज्र
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ए-ऐश्वर्या
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1911	भाद्रपद	29
पंजाबी	संवत : 2046	आश्विन	5
बंगाली	सन् : 1396	आश्विन	4
तमिल	संवत : 2046	पुरुटासी	4
केरल	कोल्लम : 1165	कन्नी	4
नेपाली	संवत : 2046	आश्विन	5
चैत्रादि	संवत : 2046	आश्विन	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2046	भाद्रपद	कृष्ण 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 5
तिथि समाप्ति काल _____: 18:57:04
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 08:21:21 घंटे
जन्म योग _____: कृतिका
सूर्योदय कालीन योग _____: हर्षण
योग समाप्ति काल _____: 19:42:20 घंटे
जन्म योग _____: वज्र
सूर्योदय कालीन करण _____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 08:20:35 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 47:19:08
भभोग _____: 55:18:53
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 0 वर्ष 10 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____: मार्गशीर्ष
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: हस्त
योग _____: शुक्ल
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सर्प
लग्न _____: वृष
सूर्य _____: वृश्चिक
चन्द्र _____: धनु
मंगल _____: धनु
बुध _____: कन्या
गुरु _____: मकर
शुक्र _____: मकर
शनि _____: तुला
राहु _____: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

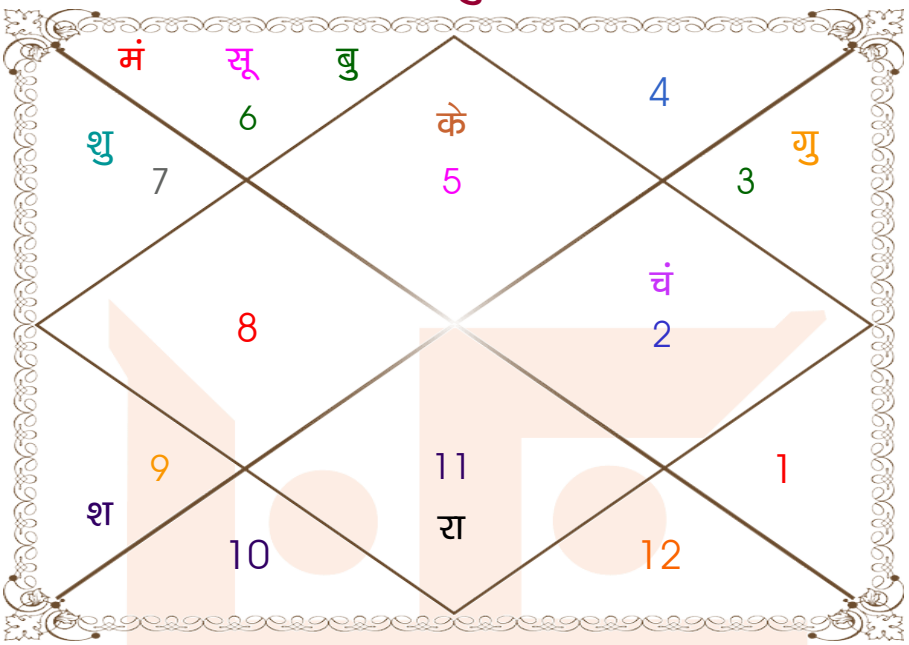

चन्द्र कुंडली

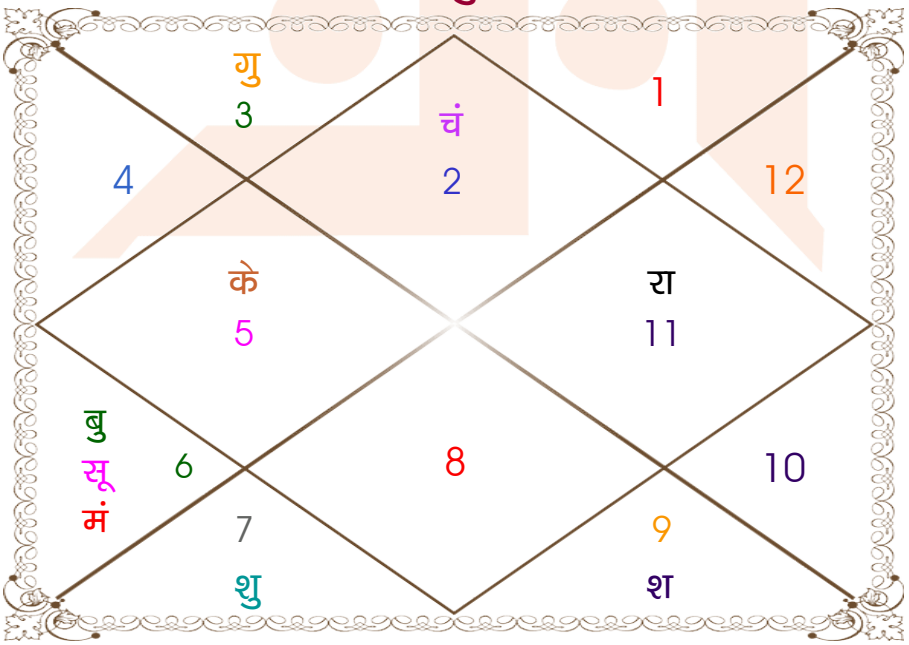

Meenna Salaria Astro &Numerio
Delhi
9667113751
salaria.meena@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

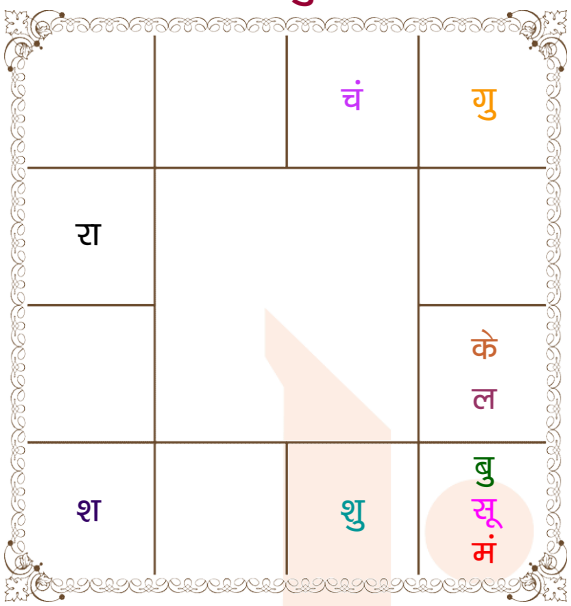

लग्न कुंडली

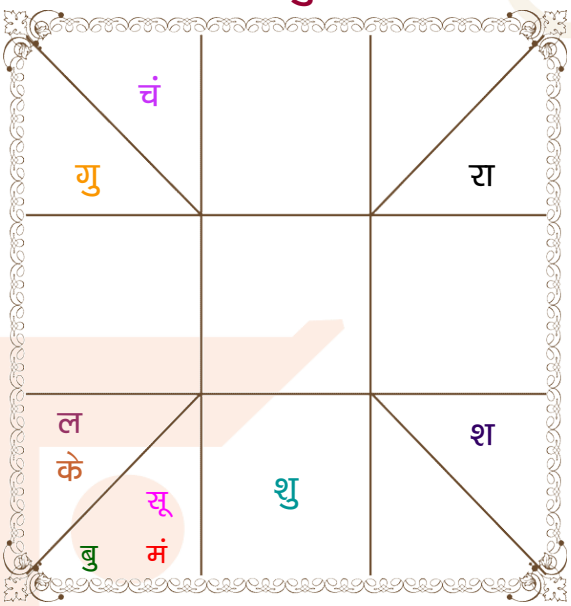

विंशोत्तरी
सूर्य 0वर्ष 10मा 9दि

सूर्य

20/09/1989

31/07/2104

सूर्य	30/07/1990
चन्द्र	30/07/2000
मंगल	30/07/2007
राहु	30/07/2025
गुरु	30/07/2041
शनि	30/07/2060
बुध	30/07/2077
केतु	30/07/2084
शुक्र	31/07/2104

योगिनी
उल्का 0वर्ष 10मा 9दि

उल्का

30/07/2020

30/07/2026

उल्का	30/07/2021
सिद्धा	29/09/2022
संकटा	29/01/2024
मंगला	30/03/2024
पिंगला	30/07/2024
धान्या	28/01/2025
भ्रामरी	29/09/2025
भद्रिका	30/07/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	06:05:51	252:58:16	मघा	2	10	सूर्य	केतु	राहु	---
सूर्य			कन्या	03:25:47	00:58:37	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	सम राशि
चंद्र			वृष	08:05:33	14:20:27	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	मूलत्रिकोण
मंगल		अ	कन्या	06:37:30	00:38:48	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
बुध	व	अ	कन्या	13:04:42	00:53:45	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	उच्च राशि
गुरु			मिथु	14:47:20	00:06:58	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	केतु	शत्रु राशि
शुक्र			तुला	15:08:04	01:09:22	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	केतु	मूलत्रिकोण
शनि			धनु	13:38:55	00:00:52	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	सम राशि
राहु	व		कुंभ	01:40:42	00:02:55	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	01:40:42	00:02:55	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	07:39:51	00:00:31	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
नेप	व		धनु	15:53:34	00:00:02	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	---
प्लूटो			तुला	19:36:07	00:01:50	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	---
दशम भाव			मेष	25:53:59	--	भरणी	--	2	मंगल	शुक्र	केतु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:42:58

लग्न-चलित

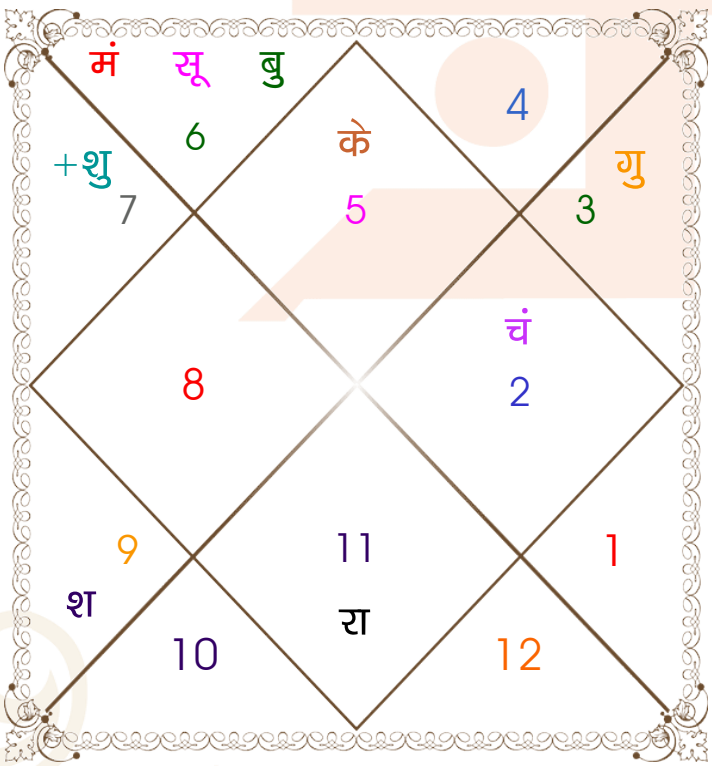

चन्द्र कुंडली

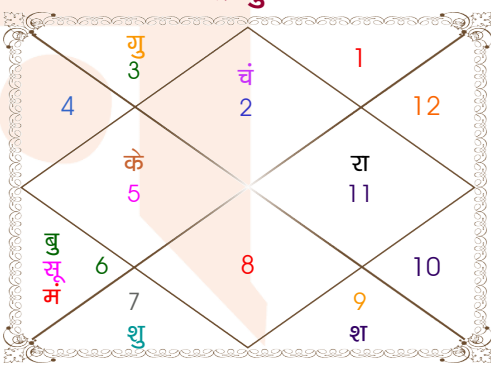

नवमांश कुंडली

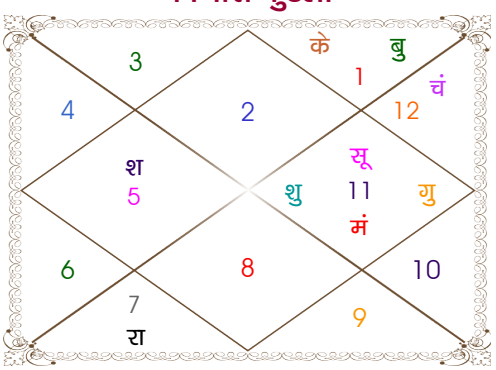

Meenna Salaria Astro &Numerio
Delhi
9667113751
salaria.meena@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	19:23:52	सिंह	06:05:51
2	सिंह	19:23:52	कन्या	02:41:53
3	कन्या	15:59:55	कन्या	29:17:56
4	तुला	12:35:57	तुला	25:53:59
5	वृश्चिक	12:35:57	वृश्चिक	29:17:56
6	धनु	15:59:55	मकर	02:41:53
7	मकर	19:23:52	कुम्भ	06:05:51
8	कुम्भ	19:23:52	मीन	02:41:53
9	मीन	15:59:55	मीन	29:17:56
10	मेष	12:35:57	मेष	25:53:59
11	वृष	12:35:57	वृष	29:17:56
12	मिथुन	15:59:55	कर्क	02:41:53

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	06:05:51
2	सिंह	26:00:35
3	कन्या	22:05:31
4	तुला	25:53:59
5	धनु	04:30:41
6	मकर	08:45:24
7	कुम्भ	06:05:51
8	कुम्भ	26:00:35
9	मीन	22:05:31
10	मेष	25:53:59
11	मिथुन	04:30:41
12	कर्क	08:45:24

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली

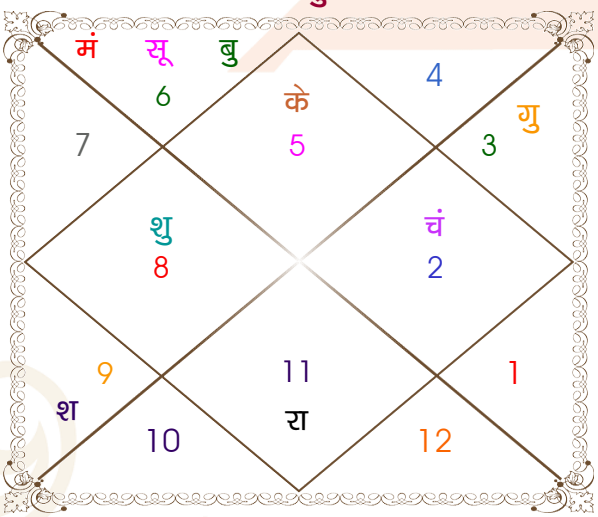

भाव कुंडली

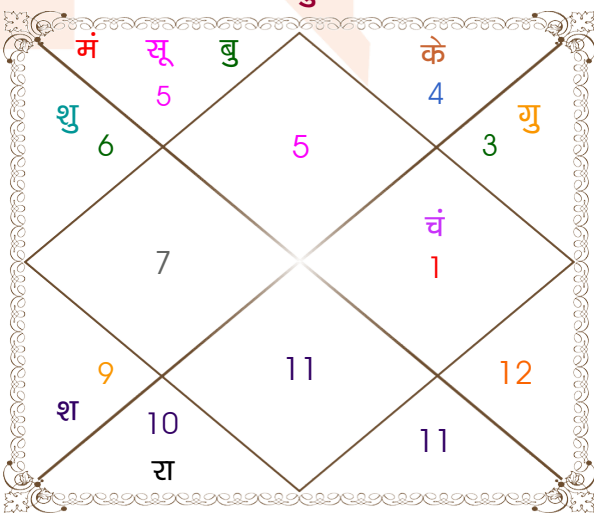

Meenna Salaria Astro &Numerio
Delhi
9667113751
salaria.meena@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 0 वर्ष 10 मास 9 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
20/09/1989		30/07/1990		30/07/2000		30/07/2007		30/07/2025	
30/07/1990		30/07/2000		30/07/2007		30/07/2025		30/07/2041	
	00/00/0000	चंद्र	31/05/1991	मंगल	26/12/2000	राहु	12/04/2010	गुरु	17/09/2027
	00/00/0000	मंगल	30/12/1991	राहु	13/01/2002	गुरु	04/09/2012	शनि	30/03/2030
	00/00/0000	राहु	29/06/1993	गुरु	20/12/2002	शनि	12/07/2015	बुध	05/07/2032
	00/00/0000	गुरु	29/10/1994	शनि	29/01/2004	बुध	29/01/2018	केतु	11/06/2033
	00/00/0000	शनि	30/05/1996	बुध	25/01/2005	केतु	16/02/2019	शुक्र	10/02/2036
	00/00/0000	बुध	29/10/1997	केतु	23/06/2005	शुक्र	16/02/2022	सूर्य	28/11/2036
	00/00/0000	केतु	30/05/1998	शुक्र	24/08/2006	सूर्य	11/01/2023	चंद्र	30/03/2038
	20/09/1989	शुक्र	29/01/2000	सूर्य	29/12/2006	चंद्र	11/07/2024	मंगल	06/03/2039
शुक्र	30/07/1990	सूर्य	30/07/2000	चंद्र	30/07/2007	मंगल	30/07/2025	राहु	30/07/2041

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
30/07/2041		30/07/2060		30/07/2077		30/07/2084		31/07/2104	
30/07/2060		30/07/2077		30/07/2084		31/07/2104		21/09/2109	
शनि	02/08/2044	बुध	26/12/2062	केतु	26/12/2077	शुक्र	29/11/2087	सूर्य	17/11/2104
बुध	12/04/2047	केतु	24/12/2063	शुक्र	25/02/2079	सूर्य	28/11/2088	चंद्र	19/05/2105
केतु	21/05/2048	शुक्र	23/10/2066	सूर्य	03/07/2079	चंद्र	30/07/2090	मंगल	24/09/2105
शुक्र	21/07/2051	सूर्य	30/08/2067	चंद्र	01/02/2080	मंगल	29/09/2091	राहु	18/08/2106
सूर्य	02/07/2052	चंद्र	28/01/2069	मंगल	29/06/2080	राहु	29/09/2094	गुरु	07/06/2107
चंद्र	01/02/2054	मंगल	25/01/2070	राहु	18/07/2081	गुरु	30/05/2097	शनि	19/05/2108
मंगल	12/03/2055	राहु	14/08/2072	गुरु	24/06/2082	शनि	31/07/2100	बुध	25/03/2109
राहु	16/01/2058	गुरु	20/11/2074	शनि	02/08/2083	बुध	01/06/2103	केतु	31/07/2109
गुरु	30/07/2060	शनि	30/07/2077	बुध	30/07/2084	केतु	31/07/2104	शुक्र	21/09/2109

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 0 वर्ष 10 मा 12 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
30/07/2025		17/09/2027		30/03/2030		05/07/2032		11/06/2033	
17/09/2027		30/03/2030		05/07/2032		11/06/2033		10/02/2036	
गुरु	11/11/2025	शनि	11/02/2028	बुध	26/07/2030	केतु	25/07/2032	शुक्र	21/11/2033
शनि	14/03/2026	बुध	21/06/2028	केतु	12/09/2030	शुक्र	20/09/2032	सूर्य	08/01/2034
बुध	03/07/2026	केतु	14/08/2028	शुक्र	28/01/2031	सूर्य	07/10/2032	चंद्र	30/03/2034
केतु	17/08/2026	शुक्र	15/01/2029	सूर्य	10/03/2031	चंद्र	04/11/2032	मंगल	26/05/2034
शुक्र	25/12/2026	सूर्य	02/03/2029	चंद्र	18/05/2031	मंगल	24/11/2032	राहु	19/10/2034
सूर्य	02/02/2027	चंद्र	18/05/2029	मंगल	06/07/2031	राहु	14/01/2033	गुरु	26/02/2035
चंद्र	08/04/2027	मंगल	11/07/2029	राहु	07/11/2031	गुरु	01/03/2033	शनि	30/07/2035
मंगल	23/05/2027	राहु	27/11/2029	गुरु	25/02/2032	शनि	24/04/2033	बुध	15/12/2035
राहु	17/09/2027	गुरु	30/03/2030	शनि	05/07/2032	बुध	11/06/2033	केतु	10/02/2036

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
10/02/2036		28/11/2036		30/03/2038		06/03/2039		30/07/2041	
28/11/2036		30/03/2038		06/03/2039		30/07/2041		02/08/2044	
सूर्य	25/02/2036	चंद्र	08/01/2037	मंगल	19/04/2038	राहु	16/07/2039	शनि	20/01/2042
चंद्र	20/03/2036	मंगल	05/02/2037	राहु	09/06/2038	गुरु	10/11/2039	बुध	25/06/2042
मंगल	06/04/2036	राहु	19/04/2037	गुरु	25/07/2038	शनि	27/03/2040	केतु	28/08/2042
राहु	20/05/2036	गुरु	23/06/2037	शनि	17/09/2038	बुध	30/07/2040	शुक्र	27/02/2043
गुरु	28/06/2036	शनि	08/09/2037	बुध	04/11/2038	केतु	19/09/2040	सूर्य	23/04/2043
शनि	13/08/2036	बुध	16/11/2037	केतु	24/11/2038	शुक्र	12/02/2041	चंद्र	23/07/2043
बुध	24/09/2036	केतु	15/12/2037	शुक्र	20/01/2039	सूर्य	28/03/2041	मंगल	25/09/2043
केतु	11/10/2036	शुक्र	06/03/2038	सूर्य	06/02/2039	चंद्र	09/06/2041	राहु	08/03/2044
शुक्र	28/11/2036	सूर्य	30/03/2038	चंद्र	06/03/2039	मंगल	30/07/2041	गुरु	02/08/2044

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
02/08/2044		12/04/2047		21/05/2048		21/07/2051		02/07/2052	
12/04/2047		21/05/2048		21/07/2051		02/07/2052		01/02/2054	
बुध	19/12/2044	केतु	05/05/2047	शुक्र	29/11/2048	सूर्य	08/08/2051	चंद्र	19/08/2052
केतु	14/02/2045	शुक्र	12/07/2047	सूर्य	26/01/2049	चंद्र	06/09/2051	मंगल	22/09/2052
शुक्र	28/07/2045	सूर्य	01/08/2047	चंद्र	03/05/2049	मंगल	26/09/2051	राहु	18/12/2052
सूर्य	15/09/2045	चंद्र	04/09/2047	मंगल	09/07/2049	राहु	17/11/2051	गुरु	05/03/2053
चंद्र	06/12/2045	मंगल	28/09/2047	राहु	30/12/2049	गुरु	02/01/2052	शनि	05/06/2053
मंगल	02/02/2046	राहु	27/11/2047	गुरु	02/06/2050	शनि	26/02/2052	बुध	26/08/2053
राहु	29/06/2046	गुरु	20/01/2048	शनि	02/12/2050	बुध	15/04/2052	केतु	28/09/2053
गुरु	07/11/2046	शनि	24/03/2048	बुध	15/05/2051	केतु	05/05/2052	शुक्र	03/01/2054
शनि	12/04/2047	बुध	21/05/2048	केतु	21/07/2051	शुक्र	02/07/2052	सूर्य	01/02/2054

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	89%	धन, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	83%	धन, भाग्योदय, सुख
पन्ना	बुध	77%	धन, धनार्जन
गोमेद	राहु	70%	दम्पति, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	70%	स्वास्थ्य, धन
पुखराज	गुरु	67%	धनार्जन, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
हीरा	शुक्र	67%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	52%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च
नीलम	शनि	25%	सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

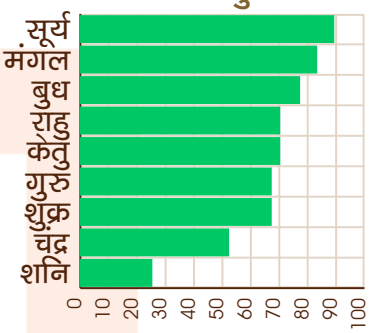

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	30/07/1990	100%	58%	89%	77%	73%	55%	0%	58%	58%
चंद्र	30/07/2000	95%	64%	83%	83%	67%	67%	25%	58%	58%
मंगल	30/07/2007	95%	58%	95%	64%	73%	67%	25%	58%	77%
राहु	30/07/2025	77%	29%	70%	77%	67%	74%	38%	83%	58%
गुरु	30/07/2041	95%	58%	89%	64%	80%	55%	25%	70%	70%
शनि	30/07/2060	77%	29%	70%	83%	67%	74%	50%	77%	58%
बुध	30/07/2077	95%	29%	83%	89%	67%	74%	25%	70%	70%
केतु	30/07/2084	77%	29%	89%	77%	67%	74%	0%	58%	83%
शुक्र	31/07/2104	77%	29%	83%	83%	67%	80%	38%	77%	77%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/09/1989-20/03/1990	20/06/1990-14/12/1990	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-06/06/2000	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-05/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-09/09/2009	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-20/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-30/05/2032	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-12/07/2034	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-12/07/2039	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-10/07/2061	13/02/2062-06/03/2062	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगी।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव पर होने से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराक्रम से भाग्य का निर्माण करेंगी तथा जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगी।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगी तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगी साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए। इससे आप

प्रसन्नतापूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगी तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपको वे सर्वदा विशेष स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपको उनसे आर्थिक सहयोग भी प्रायः मिलता रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प तनाव दृष्टिगोचर होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए ही रहेगा कुछ समय उपरान्त स्वतः सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही सुख दुःख में आप उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर

रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराक्रमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराक्रमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(30/07/2007 - 30/07/2025)

राहु की महादशा 30/07/2007 को आरम्भ और 30/07/2025 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति, साझेदारों से लाभ और स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको यात्रा तथा वाणिज्य-व्यवसाय में लाभ तथा विदेश में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको पित्तरोग, उदररोग, ज्वर, सरदर्द, फोड़ा-फुन्सी, व्रण (फोड़ा), अल्सर आदि रोग हो सकते हैं। सन्तुलित भोजन तथा अन्य उपायों से इनमें से बहुतों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको वाणिज्य-व्यापार, यात्रा तथा विदेश से लाभ होगा। किसी भी अनुबंध या समझौते के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। आपको सट्टे तथा निवेश में पर्याप्त लाभ होगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए दवा, कम्प्यूटर, रसायन, वैमानिकी, उड्डयन तथा मशीन से संबंधित क्षेत्रों का चयन कर सकते हैं। दवा, एण्टीबायोटिक, यंत्र-उपकरण, मंशीनरी आदि का व्यापार-लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को पर्याप्त लाभ मिलेगा और पदोन्नति तथा स्थानान्तरण होगा। आपको अपने सहायकों व सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों की जीवन-चर्या में प्रगति होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा व्यापार में विस्तार होगा। जीवन चर्या में प्रगति के लिए यह दशा अत्यन्त सुन्दर है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन जायदाद से लाभ तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको भू-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आप प्रेरित और दृढ़निश्चय होंगे और बड़ी संख्या में शिक्षा से अलग गतिविधियों में भाग लेंगे। दवा, कम्प्यूटर-विज्ञान, गणित, विज्ञान, इन्जीनियरिंग आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप में नेतृत्व-गुण विद्यमान हैं जो इस दशा के दौरान सामने आएंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की छोटी यात्रा, उत्तम स्वास्थ्य और जीवन-चर्चा में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी को सम्पत्ति, कुछ मामूली सवास्थ्य-समस्या और वाणिज्य-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपकी माता की अचल सम्पत्ति का संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। जबकि पिता को समृद्धि, सम्पत्ति तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, आय में अचानक वृद्धि और शिक्षा में समस्या होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को ख्याति, यश, पद और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा, जीवनचर्या में उन्नति और विवाह होगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, मामूली स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों पर विजय मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में उत्तम शिक्षा, बच्चों से सुख, सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान खुशहाली, लम्बी यात्रा और पिता से लाभ मिलेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में चौतरफा समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा सफलता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान प्रगति और जीवन में सफलता मिलेगी जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, व्यवसाय में प्रगति और व्यापार में लाभ होगा।

महादशा :- गुरु
(30/07/2025 - 30/07/2041)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 30/07/2025 शुरू तथा 30/07/2041 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, आमदनी, लाभ, समृद्धि, स्वास्थ्य लाभ और भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति आपकी कुण्डली में एकादश भाव में है तथा तृतीय, पंचम एवं सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए साहस एवं समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु एकादश भाव में स्थित होकर तृतीय भाव को (पंचम एवं सप्तम भावों के अतिरिक्त) देख रहा है जिसके फल स्वरूप आप हिम्मत, बहादुरी तथा मजबूती के साथ सभी समस्याओं को झेल पाएंगे और कोई बड़ी घटना या दुर्घटना आपको या आपके स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं कर पाएगी और आपको सामान्य कार्य करने में असुविधा नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु एकादश भाव अर्थात आय भाव में स्थित है तथा अपने ही भाव को शक्ति

प्रदान कर रहा है जिसके फलस्वरूप आप इस दशा काल में चल या अचल संपत्ति अर्जित नहीं कर पाएँगे और भोग विलास की वस्तुओं पर खर्च करते हुए एक सामान्य जीवन का आनन्द लेंगे।

व्यवसाय :

यदि आप नौकरी में हैं तो आपको उन्नति तथा आय एवं धन में वृद्धि मिलेगी। व्यवसाय के प्रति अनेक नये विचार आपके दिमाग में आएंगे जिससे आप अपने व्यवसाय में नाम और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अपके मित्र व्यवसाय में उन्नति करने की आपको प्रेरणा देंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय तथा उत्साहपूर्ण बनाएँगे। गुरु की एकादश भाव से सप्तम अर्थात जीवन साथी के भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपके जीवन साथी हमेशा आपकी परेशानी में हाथ बँटाने के लिए तैयार रहेंगे। आपके बड़े भाई तथा मित्र भी आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने में सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी ज्ञान की खोज के प्रति रुचि रहेगी।

अंर्तदशा :- गुरु - गुरु
(30/07/2025 - 17/09/2027)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 30/07/2025 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 30/07/2025 को प्रारंभ होकर 17/09/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको भौतिक प्रगति के बहुत अवसर मिलेंगे। बड़े भाई-बहनों और चाचा से संबंध उत्तम रहेंगे। कार्य की प्रशंसा होगी, सम्मान बढ़ेगा, पुरस्कृत हो सकते हैं। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। बुद्धि और विवेक उत्तम रहेंगे। घर में मांगलिक उत्सव हो सकते हैं। विदेश यात्रा संभव है। जीवनस्तर उच्च होगा, चुनाव और अन्य गतिविधियों में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता को साहित्य से लाभ होगा। माता को साझेदार से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, धन, कार्यों में सफलता और आत्मविश्वास में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा और कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा; यात्राएं होंगी, जीवनस्तर सुधरेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधासंपन्न होगा, बहुत से सुअवसर मिलेंगे, शत्रु परास्त होंगे। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कान और शरीर के निचले हिस्से में कोई मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुएं, हल्दी और पीले अनाज दान में दें।

अंर्तदशा :- गुरु - शनि
(17/09/2027 - 30/03/2030)

आपकी बृहस्पति की महादशा 30/07/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/09/2027 को प्रारंभ होकर 30/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको संतान से सुख मिलेगा। पारंपरिक निवेश से लाभ हो सकता है। अचल संपत्ति और माता के माध्यम से आय हो सकती है। सर्जनात्मक कार्य करेंगे। विवाह हो सकता है; ज़िम्मेदारियां बढ़ सकती हैं। विदेश यात्रा संभव है। प्रोन्नति हो सकती है, मगर उच्चाधिकारियों से थोड़ा संघर्ष करना पड़ सकता है। आय बढ़ सकती है। जीवन अनुशासनपूर्ण रहेगा।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता की यात्राएं हो सकती हैं

; सांसारिक मामलों में सफल रहेंगे। माता का धनार्जन उत्तम होगा; घरेलू सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यों में सफलता, भाइयों और मित्रों से लाभ, साझेदारी से लाभ, विवाह और यात्रा का संकेत है।

आपकी संतान सब कार्यों में सफल होगी; शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रोन्नति हो सकती है; धनार्जन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है, धन संचित होगा, यात्रा संभव है। परामर्शदाताओं के कार्य में परिवर्तन हो सकता है। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। पाचनतंत्र की मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः